

बुन्देलखण्ड के एकीकृत बुन्देला साम्राज्य का इतिहास

प्रोफेसर अनिल कुमार मिश्र
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग
वी.एस.एस.डी कालेज कानपुर

महाराजा छत्रसाल बुन्देला ने बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक इकाई को राजनैतिक एकता प्रदान की। औरंगजेब की मृत्यु के समय भारत में अनेक स्वतंत्र सत्तायें स्थापित हुयी।¹ अवध, बंगाल, हैदराबाद की भांति बुन्देलखण्ड भी मुगलों की केन्द्रीय शक्ति से अलग स्वतंत्र राज्य बना। औरंगजेब-आलमगीर (1658 से 1707 ई0) की मृत्यु के पश्चात बने मुगल बादशाह बहादुर शाह प्रथम, जहांदार शाह, रफीउदज्जात, रफी उद्दौला, फर्रुखासियर, पूर्ववर्ती मुगल शासन की तुलना में कमजोर सिद्ध हुये तथा पूरे देश में विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित हुयी स्वतंत्र सत्तायें क्रमशः मजबूत होती चली गयी। इन सब स्वतंत्र सत्ताओं को पतनशील मुगल शक्ति तथा मराठों की उदीयमान शक्ति से खतरा था।² बुन्देलखण्ड में इन स्वतंत्र सत्ताओं में से एक था। महाराजा छत्रसाल बुन्देला ने बुन्देलखण्ड को एकीकृत करने में अनेक युद्धों का सामना किया।³ अतः छत्रसाल बुन्देला के साम्राज्य के उत्तराधिकार विभाजन के पूर्व साम्राज्य विस्तार एवं सीमाओं का परीक्षण उचित होगा तथा इस परीक्षण के अन्तर्गत महाराजा छत्रसाल बुन्देला द्वारा किये गये साम्राज्य विस्तार का अनुशीलन समीचीन होगा।⁴ छत्रसाल द्वारा बुन्देलखण्ड में क्रमवार विस्तार का संक्षिप्त विवरण निम्नवत है।

छत्रसाल ने 1671 ई0 से बुन्देलखण्ड की मोर पहाड़ी में सैन्य एकत्रीकरण का कार्य आरम्भ किया। छत्रसाल ने बुन्देलखण्ड के मुगल ठिकानों पर छापामार युद्ध प्रणाली का सफल प्रयोग किया तथा धन सम्पदा की लूटपाट की। मुगल साम्राज्य से चौथ वसूलना प्रारम्भ कर अपनी स्थिति सुदृढ़ करना प्रारम्भ किया। धमौनी पर अधिकार करने के पश्चात छत्रसाल ने मैहर को भी अपने कब्जे में कर लिया। बांसा में मुगलों की ओर से केशवराय दुरंगी यहां का जागीरदार नियुक्त था। जो सामरिक रूप से मजबूत था, छत्रसाल ने बांसा की जागीर पर आक्रमण कर दिया जिससे केशवराय दुरंगी मारा गया तथा बांसा को छत्रसाल ने अपने कब्जे में कर लिया।⁵ यहां पर केशवराय के पुत्र विक्रम सिंह को गद्दी पर बैठाया तथा विक्रम सिंह ने छत्रसाल की आधीनता स्वीकार की।⁶

छत्रसाल ने ग्वालियर सूबे के कई ग्रामों में लूट-पाट किया तथा यहां के सूबेदार मुनवर खां को खुली चुनौती दी जिसकी सूचना पाकर मुनवर खां छत्रसाल को रोकने के लिये धूमघाट (पवांया-ग्वालियर) स्थान पर आ डटा। जहां पर छत्रसाल और मुगल सूबेदार मुनवर खां के मध्य भीषण युद्ध हुआ जिसमें छत्रसाल ने मुनवर खां को ग्वालियर तक खदेड़ा मुनवर खां ने ग्वालियर के किले में छिपकर अपनी जांच बचायी।⁷

मुनवर खां की हार की सूचना जब मुगल बादशाह औरंगजेब आलमगीर को हुयी तो छत्रसाल को रोकने के लिये औरंगजेब ने रणदूलह खां को बुन्देलखण्ड भेजने का निर्णय किया।⁸ रणदूलह खां एक बड़ी सेना लेकर बुन्देलखण्ड के दक्षिणी छोर पर युद्ध करने के लिये आ पहुंचा। बुन्देली सेना मुगलों की सेना से पहले गढाकोटा के दुर्ग को मुगलों से छीन लिया और छत्रसाल ने अपने मंत्री बलदीवान को कुछ सेना के साथ दुर्ग में रुकने का आदेश दिया तथा स्वयं मुगल सेना को रोकने के लिये शाहगढ़ के समीप आ पहुंचा। यहां बुन्देलो और मुगलों के बीच हल्की मुठभेड़ हुयी तत्पश्चात छत्रसाल अपनी सेना को वहां से अलग कर रणदूलह को गढाकोटा तक जाने दिया। जैसे ही रणदूलह ने गढाकोटा के किले पर आक्रमण किया तो दुर्ग के अन्दर से बलदीवान प्रहार करना शुरू किया तथा पीछे से छत्रसाल आकर मुगल सेना पर आक्रमण कर दिया। रणदूलह खां युद्ध में कमजोर पड़ने लगा। अन्ततः वह सागर की ओर भागने पर विवश हो गया। इस युद्ध में मुगलों की सेना को अपार क्षति हुयी, छत्रसाल ने ललितपुर तक रणदूलह खां का पीछा किया।¹⁰ रणदूलह के हार की सूचना जब

दिल्ली पहुंची तो औरंगजेब अत्यधिक चिंतित हुआ। इस बार बादशाह औरंगजेब ने तुर्की सेना को बुन्देलखण्ड अभियान में भेजने का निर्णय किया। तुर्की सेना छत्रसाल को बसिया नामक स्थान पर घेर लिया। तुर्की सेना एवं बुन्देली सेना के मध्य युद्ध छिड़ गया जिसमें बुन्देली सेना ने बादशाही सेना का डटकर मुकाबला किया। एक समय बुन्देली सेना कमजोर पड़ने लगी, तभी छत्रसाल के एक विश्वस्त सैनिक ने अदम्य साहस का परिचय देते हुये मुगल सेना के तोपखाने में आग लगा दी, जिससे तोप खाना जलने लगा जिसका लाभ उठाकर बुन्देलो ने मुगल सेना को तितर-बितर कर दिया। अन्ततः मुगल सेना की बुन्देलों के हाथों एक बार फिर से पराजित होना पड़ा। तत्पश्चात औरंगजेब ने तहव्वर खां को छत्रसाल का दमन करने के लिये बुन्देलखण्ड भेजा जिसमें तहव्वर खां भी निरुपाय होकर दिल्ली वापस लौट गया।¹¹

सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण कालिंजर का दुर्ग अब भी मुगलों के अधिकार में था। इस किले में मुगलो की तरफ से करम इलाही किलेदार नियुक्त था।¹² छत्रसाल ने इसे अपने कब्जे में करने के लिये कालिंजर पर आक्रमण कर दिया, 18 दिनों के भीषण युद्ध के पश्चात बुन्देली सेना ने किले को हस्तगत करने में सफलता पायी। इस युद्ध में छत्रसाल के कई सेनापति मारे गये, जिनमें नंदन छीपी, कृपाराम चन्देल, बाघराज परिहार, शामिल थे।¹³ छत्रसाल ने कालिंजर दुर्ग में मान्धाता चौबे को किलेदार नियुक्त किया। इस विजय के पश्चात मऊ सहानिया के जंगल में बाबा प्राणनाथ से दीक्षा प्राप्त की।¹⁴

छत्रसाल ने सन 1685 ई0 में मुगल अधिकृत सागर दमोह एवं बरहटा के स्थानीय शासकों को पराजित कर अपने अधिकार में किया। तत्पश्चात छत्रसाल ने मौदहा, मुस्करा, राठ, पनवाडी, कालपी को विजित किया।¹⁵ ओरछा के राजा भगवंत सिंह ने छत्रसाल से सम्बन्ध तोड़कर मुगलों की आधीनता स्वीकार कर ली थी। छत्रसाल के आक्रमण से बचने के लिये राजमाता अमर कुंवर ने घसान नदी के तट पर छत्रसाल से मुलाकात की और छत्रसाल की आधीनता स्वीकार कर युद्ध को टाल दिया। इसके पश्चात छत्रसाल ने ग्वालियर पर अभियान किया, जहां पर तहव्वर खां से चौथ वसूल किया। तत्पश्चात छत्रसाल ने भिलसा के दुर्ग को भी अपने अधिकार में कर लिया। इस प्रकार छत्रसाल ने बुन्देलखण्ड की सीमाओं से परे साम्राज्य विस्तार किया।¹⁶

ग्वालियर और कालपी की हार का समाचार सुनकर मुगल बादशाह औरंगजेब ने अनवर खां को छत्रसाल का दमन करने हेतु भेजा, जिसमें अनवर को भी पराजय का मुंह देखना पड़ा।¹⁷ अन्ततः औरंगजेब कूटनीतिज्ञ एवं कुशल सेनापति मिर्जा सदरुद्दीन को बुन्देलखण्ड अभियान के लिये धमौनी का सूबेदार नियुक्त किया। धमौनी उस समय मुगल छावनी थी जिसके अन्तर्गत सागर, दमोह, भोपाल आते थे। मिर्जा सदरुद्दीन ने छत्रसाल को मुगलो की अधीनता स्वीकार कराने का प्रयास किया, परन्तु सफलता नहीं मिली। जिसके फलस्वरूप छत्रसाल और मुगल सेना के मध्य युद्ध छिड़ गया जिसमें मुगलों को करारी हार का सामना करना पड़ा। मिर्जा सदरुद्दीन ने छत्रसाल को चौथ देना स्वीकार किया। छत्रसाल ने गढ़पहरा (सागर) एवं देवगढ़ पर आक्रमण कर अपने आधीन कर लिया।¹⁸ औरंगजेब ने पुनः बुन्देला शक्ति को दबाने के लिये दिल्ली के सूबेदार अब्दुल समद को नियुक्त कर बुन्देलखण्ड भेजा। अब्दुल समद भी हारकर वापस दिल्ली चला गया।¹⁹ मुगल बादशाह ने अबकी बार शाहकुली को बुन्देलों की शक्ति दबाने के लिये बुन्देलखण्ड अभियान के लिये नियुक्त किया। छत्रसाल और शाहकुली के मध्य नौगांव के पास भयंकर युद्ध हुआ। जिसमें शाहकुली पराजित होकर अलीपुर की ओर भागा, छत्रसाल ने शाहकुली का पीछा करते हुये अलीपुर में कैद कर लिया, तत्पश्चात कर देकर छोड़ दिया।²⁰ औरंगजेब के शासनकाल तक मुगल बुन्देला विद्रोह को दबाने में असमर्थ रहे।²¹ सन 1707 ई0 में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात बहादुर शाह प्रथम (मुअज्जम) दिल्ली की गद्दी पर आसीन हुआ। बहादुर शाह प्रथम ने छत्रसाल से मित्रता करने के उद्देश्य से अपने वजीर खानखाना को बुन्देलखण्ड भेजा तथा लोहागढ़ का किला जीतने के लिये छत्रसाल से सहायता का प्रस्ताव रखा जिसे छत्रसाल ने स्वीकार कर सहायता का

आश्वासन दिया। छत्रसाल ने लोहागढ़ का किला जीतकर मुगल बादशाह को सौंप दिया जिससे बहादुरशाह अत्यन्त प्रसन्न हुआ तथा छत्रसाल की स्वतंत्रता स्वीकार कर ली। छत्रसाल ने पन्ना को बुन्देलखण्ड की राजधानी घोषित कर राज्य करने लगे।²² मुगल सम्राट मुहम्मद शाह के समय दिल्ली में सैयद भाइयों का प्रभाव बढ़ गया था जिन्होंने एरच, कोंच, कालपी, मौदहा और जालौन क्षेत्रों की सूबेदारी भी इलाहाबाद के सूबेदार मुहम्मद बंगश को दे दी। मुहम्मद बंगश बुन्देलखण्ड अधिकृत करने की इच्छा से 1729 ई० जैतपुर किले ने घेर लिया। छत्रसाल और मुहम्मद बंगश के मध्य भयंकर युद्ध हुआ जिसमें बंगश ने जैतपुर दुर्ग को बुन्देलों से छीन लिया।²³ लाचार होकर छत्रसाल को गैर क्षेत्रीय मराठा पेशवा बाजीराव से सहायता की याचना करनी पड़ी इस सहायता के लिये जनश्रुति प्रचलित है—

जो गति ग्राह गजेन्द्र की, सो गति भई है आज।

बाजी जात बुन्देल की, राखौ बाजी लाज।²⁴

छत्रसाल ने पेशवा बाजीराव प्रथम को अपने राज्य का तीसरा भाग सहायता के उपलक्ष्य में देने की बात कही थी। छत्रसाल की सहायता के लिये गोविंद बल्लाल खेर (गोविंद राव पंडित) 2500 घुड़सवार लेकर आया था। मराठों की सहायता से छत्रसाल बुन्देला ने मुहम्मद खां बंगश को जैतपुर के निकट बुरी तरह से पराजित कर जैतपुर किले पर पुनः अधिकार कर लिया।²⁵ परन्तु कैप्टन पाक्सन के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'ए हिस्ट्री आफ दी बुन्देलाज' के अनुसार मुहम्मद खां बंगश का युद्ध छत्रसाल से नहीं, अपितु उनके द्वितीय पुत्र जगतराज से, छत्रसाल की मृत्यु (14 सितम्बर 1731) के कुछ समय पश्चात हुआ था और पेशवा बाजीराव इसी युद्ध में जगतराज की सहायतार्थ बुन्देलखण्ड आये थे। पेशवा ने बंगश को पराजित कर जगतराज को पुनः उसके राज्य पर आसीन किया और तभी वे बुन्देलखण्ड से लौटते समय मस्तानी नामक मुसलमान बालिका को अपने साथ ले गये।²⁶ युद्ध समाप्ति के पश्चात पेशवा द्वारा राज्य का तृतीयांश मांगा। इस प्रकार एक पत्र पन्ना दरबार रिकार्ड क्र०सं० 39 से उपलब्ध डा० भगवानदास गुप्ता ने अपने ग्रन्थ "महाराजा छत्रसाल बुन्देला" में उद्धृत किया है जिसमें छत्रसाल ने अपने पुत्र हृदयशाह को लिखा था 'पेशवा के वचन के अनुसार राज न दौ जावे बल्कि कछु रुपये दै कै टाल दिया जावो।' परन्तु वास्तविक रूप में बुन्देलखण्ड का दक्षिणी हिस्सा (जालौन, झांसी, सागर) मराठों को प्राप्त हुये।²⁷ छत्रसाल बुन्देला की मृत्यु 12 मई सन 1731 को पन्ना में हुयी थी। मृत्यु के समय पेशवा बाजीराव भी पन्ना आ पहुँचा। छत्रसाल की मृत्यु के पश्चात साम्राज्य तीन भागों में विभक्त किया गया जिसमें प्रथम भाग हृदयशाह बुन्देला तथा दूसरा भाग जगतराज बुन्देला और तीसरा भाग पेशवा बाजीराव को मिला। हृदयशाह को पन्ना, मऊ, गढ़ाकोटा, कालिंजर, शाहगढ़ और इसके आस-पास का क्षेत्र मिला। हृदयशाह के राज्य की वार्षिक आय उस समय 42 लाख रुपये थी। जगतराज बुन्देला जो छत्रसाल के दूसरे पुत्र थे, इनको साम्राज्य का दूसरा भाग प्राप्त हुआ जिसके अन्तर्गत जैतपुर, अजयगढ़, चरखारी, बिजावर, सरीला भूरागढ़ और बांदा आये। जगतराज के राज्य की आमदनी 36 लाख रुपये वार्षिक थी। साम्राज्य का तीसरा भाग पेशवा बाजीराव को प्राप्त हुआ। जिसके अन्तर्गत कालपी, हटा, हृदयनगर, जालौन गुरसरायं, झांसी, सिरौज गुना गढ़ा कोटा, और सागर का क्षेत्र मिला, इस राज्य की वार्षिक आय 33 लाख रुपये थी।²⁸

साम्राज्य विभाजन के समय पेशवा बाजीराव तथा छत्रसाल के पुत्रों हृदयशाह एवं जगतराज के मध्य निम्नलिखित समझौते हुये।

1. बुन्देला शासक हृदयशाह एवं जगतराज चम्बल एवं यमुना नदी के उस पार के क्षेत्र को छोड़कर अन्य समस्त सैन्य अभियानों में पेशवा की सहायता करेंगे तथा युद्ध में प्राप्त सम्पत्ति में बराबर के सहभागी होंगे।
2. पेशवा के दक्षिणी भारत के सैन्य अभियानों में व्यवस्तता के समय दोनों बुन्देला शासक पेशवाई बुन्देलखण्ड की अधिकतम दो माह तक सुरक्षा करेंगे।

3. जिस प्रकार से छत्रसाल ने पेशवा को अपना तीसरा पुत्र माना उसी प्रकार पेशवा बाजीराव हृदयशाह एवं जगतराज से मातृत्व की भावना रखेंगे।

छत्रसाल के समय से ही ओरछा स्वतंत्र था अतः साम्राज्य विभाजन के समय भी इस क्षेत्र को अलग ही रखा गया था।²⁹

पन्ना, जैतपुर.... इत्यादि राज्य की स्थापना

साम्राज्य विभाजन के पश्चात हृदयशाह ने अपने पिता छत्रसाल की राजधानी पन्ना को ही अपने साम्राज्य की राजधानी घोषित किया।

हृदयशाह बुन्देला :- (1732 से 1739 ई0) छत्रसाल के समय हृदयशाह गढ़ाकोटा का दुर्ग पति था। गढ़ाकोटा के समीप उसने हृदय नगर भी बसाया। हृदयशाह विलासी प्रवृत्ति का राजा था। उनका बनवाया हुआ रेडी महल धुवेला (मऊ) महल की बायीं ओर पहाड़ी की तलहटी से अब भी दृष्टव्य है। हृदयशाह ने छत्रसाल के शयन कक्ष के स्थान पर उनकी समाधि बनवायी जो धूरताल (धुवेलाताल) के बायें पार्श्व में उनका स्मारक आज भी दर्शनीय है। यह मऊ सहानिया से 13 किमी0 दूर स्थित है। जो बाजीराव पेशवा के सहयोग से बनाया गया था। हृदयशाह ने समाधि में एक नियमित पुजारी रखा तथा समाधि के खर्च के लिए सिंगरावन नामक गाँव नियत कर दिया।³⁰

हृदयशाह ने रीवा के बघेला राजा अवधूत सिंह पर आक्रमण किया जिसमें अवधूत सिंह प्रतापगढ़ भाग गया अवधूत सिंह ने मुगल सम्राट बहादुरशाह से हस्तक्षेप की विनती की। बहादुरशाह ने पत्र के माध्यम से हृदयशाह को रीवा छोड़ने का आग्रह किया। जिसके फलस्वरूप हृदयशाह ने रीवा से अपनी सेना हटा ली परन्तु फिर भी वीरसिंहपुर को अपने कब्जे में ले लिया।³¹

हृदयशाह के नौ पुत्र थे—सभा सिंह, पृथ्वी सिंह, अमर सिंह, मेदनीमल, सलीम सिंह, (जालम सिंह) शंकर सिंह, समर सिंह, गंधर्व सिंह एवं अनूप सिंह थे। 7 वर्ष राज्य कर वह 1739 ई0 में स्वर्गवासी हो गये।³²

सभा सिंह बुन्देला :- (1739 से 1752) हृदयशाह के पश्चात सभा सिंह पन्ना राज्य का राजा बना। सभा सिंह के तीन पुत्र थे। अमान सिंह, हिन्दूपत और खेत सिंह। अमान सिंह, सभा सिंह के बड़े पुत्र न थे परन्तु अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि होने के कारण सभा सिंह को अमान सिंह से अत्यन्त लगाव था। सभा सिंह ने अमान सिंह को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।³³

अमान सिंह (1752 से 1758) :- सभा सिंह की मृत्युपरान्त उनके पुत्र अमान सिंह सिंहासन में बैठा। अमान सिंह के गद्दी पर बैठते ही राजनैतिक कलह उत्पन्न हो गयी। अमान सिंह निःसंतान थे तथा अधिकतर चित्रकूट में रहा करते थे। उनके भाई हिन्दूपत ने राजसत्ता के लोभ में अमान सिंह की हत्या कर दी। राजसिंहासन के लिये यह संघर्ष दुर्ग तालाब (चित्रकूट) में हुआ था हिन्दूपत की तरफ से बेनी हुजुरी एवं मृत अमान सिंह की तरफ से खेमराज चौबे ने युद्ध किया। पर कालिंजर पर चौबे सत्ता बनी रही।³⁴

हिन्दूपत (1758-1776) :- अपने भाई अमान सिंह की हत्या कर गद्दी पर बैठे थे। इस समय बेनी हुजुरी कामदार का प्रभाव बढ़ गया था। बेनी हुजुरी ने छतरपुर में बेनीगंज मुहल्ला बसाया था। हिन्दूपत ने लौड़ी में बंबूर देवी का मंदिर, पन्ना में जुगुलकिशोर मंदिर, छतरपुर महल, राजगढ़ किला, महाराजगंज (बिजावर) का किला बनवाया था। सन 1763 में लखनऊ के नवाब शुजाउद्दौला ने उंगई क्षेत्र (बुन्देलखण्ड) पर आक्रमण कर हिन्दूपत से कर वसूल किया था। हिन्दूपत के तीन पुत्र सरनेत सिंह, अनिरुद्ध सिंह और धौकल सिंह थे।³⁵

हिन्दूपत अपने ज्येष्ठ पुत्र सरनेत सिंह से असंतुष्ट था तथा दूसरे पुत्र अनिरुद्ध सिंह से प्रसन्न था। उसने पन्ना की राजगद्दी अनिरुद्ध को दी तथा सरनेत सिंह को राजनगर (छतरपुर) की जागीर देकर राजनगर में रखा था। बेनी हुजुरी अनिरुद्ध सिंह की कामदारी तथा खेमराज चौबे को कालिंजर की किलेदारी दी गयी थी। बेनी हुजुरी को मैहर की जागीरदारी भी दी गयी।³⁶

अनिरुद्ध सिंह (1776 से 1780) :- हिन्दूपत की मृत्यु के पश्चात अनिरुद्ध सिंह पन्ना की राजगद्दी पर आसीन हुआ। सरमेद सिंह खुद को उत्तराधिकारी घोषित करते हुये पन्ना की राजगद्दी के लिये विद्रोह कर दिया। 1780 ई० में अनिरुद्ध सिंह स्वर्गवासी हो गया।³⁷

सरमेद सिंह (1780 से 1785) :- अनिरुद्ध सिंह के निधनोपरान्त सरमेद सिंह एवं धौकल सिंह में गद्दी के लिये संघर्ष शुरू हो गया। खेमराज चौबे की सलाह के अनुसार सरमेद सिंह ने सुंगरा (कुलपहाड़) के नोने अर्जुन सिंह को अपने पक्ष में ले लिया। उसी समय बेनी हुजुरी छतरपुर आया हुआ था। छतरपुर में भगवंत चौधरी नामक कामदार के हिसाब में गडबड़ी थी। जिससे बेनी हुजुरी ने गांलिया देकर उसे जूता मार दिया था। परिणामतः भगवंत चौधरी भी सरमेद सिंह एवं नोने अर्जुन सिंह से मिल गया। इस घटना के बाद 1782 ई० में जब बेनी हुजुरी छतरपुर से पन्ना जा रहा था तभी रास्ते में भगवंत चौधरी की सलाह पर नोने अर्जुन सिंह ने उसकी हत्या कर दी। बेनी हुजुरी की हत्या के उपरान्त धौकल सिंह का पक्ष कमजोर पड़ गया। जिससे राजसत्ता पर सरमेद सिंह का पूर्णतया अधिकार हो गया। 1785 ई० को सरमेद सिंह की मृत्यु हो गयी। सरमेद सिंह की मृत्यु के पश्चात राज्य में अराजकता का माहौल फैल गया। जिससे जागीरदार स्वतंत्र होने लगे।³⁸

संदर्भ

1. गुप्ता, बी०डी०, "लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ महाराजा छत्रसाल बुन्देला", रेडिएन्ट पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1980 पेज-40
2. पूर्वोद्धृत, पेज-41
3. गुप्ता, बी०डी०, "बाजीराव मस्तानी एवं उनके वंशज बांदा के नवाब", विद्या मन्दिर प्रकाशन, ग्वालियर, 1984 पेज-21
4. इरविन, विलियम, "बंगश नवाब्स ऑफ फर्रुखाबाद (1713-1857)" पार्ट-1-हिस्ट्री, लिटरेचर, नं०-द्वितीय कलकत्ता, 1879 पेज-105
5. तिवारी, गोरेलाल, "बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास", काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1934, पेज-185
6. त्रिपाठी, काशीप्रसाद, "बुन्देलखण्ड का वृहद इतिहास-राजतंत्र से जनतंत्र", समय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पेज-133
7. तिवारी, गोरेलाल, पूर्वोद्धृत, पेज-186
8. गुप्ता, बी०डी०, "लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ महाराजा छत्रसाल बुन्देला", पूर्वोद्धृत, पेज-70
9. तिवारी, गोरेलाल, पूर्वोद्धृत, पेज-189
10. त्रिपाठी, काशीप्रसाद पूर्वोद्धृत, पेज-133
11. त्रिपाठी, गोरेलाल, पूर्वोद्धृत, पेज-190 से 192
12. त्रिपाठी, काशीप्रसाद, पूर्वोद्धृत, पेज-133
13. तिवारी, गोरेलाल, पूर्वोद्धृत, पेज-193
14. ग्राज, एफ०, एम०, 'द सेक्ट ऑफ प्राणनाथीज', जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल', नं०-2, कलकत्ता, 1879, पेज-179

टिप्पणी :- प्रो० बी०डी० गुप्ता ने ग्राज के शोध निष्कर्षों पर शोध कार्य किये हैं। उन्होंने अपने शोध प्रबन्ध 'महाराजा छत्रसाल बुन्देला' (प्रकाशित 1958) में प्राणनाथ परम्परा तथा छत्रसाल के सम्बन्धों का अन्तिम अध्याय में चित्रित किया है।

15. त्रिपाठी, काशीप्रसाद, पूर्वोद्धृत, पेज-133
16. गुप्ता, बी०डी०, 'लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ महाराजा छत्रसाल बुन्देला', पूर्वोद्धृत, पेज-71
17. तिवारी, गोरेलाल, पूर्वोद्धृत, पेज-196
18. वही, पेज-198-199
19. वही, पेज-199

20. त्रिपाठी, काशीप्रसाद, पूर्वोधृत, पेज-133
21. गुप्ता, बी0डी0, पूर्वोधृत, पेज-71
22. वही, पेज-71, 72
23. इरविन, विलियम, पूर्वोधृत, पेज-105 से 109
24. गुप्ता, बी0डी0, पूर्वोधृत, पेज-216, त्रिपाठी, काशीप्रसाद, पूर्वोधृत, पेज-134 तथा गुप्ता, बी0डी0, पूर्वोधृत, पेज-80
25. गुप्ता, बी0डी0, पूर्वोधृत, पेज-72
26. पॉगसन, कैप्टन डब्ल्यू0आर0, 'ए हिस्ट्री ऑफ बुन्देलाज', बी0आर0 पब्लिशिंग कारपोरेशन, दिल्ली, 1974 (मुणमुद्रित), प्रथम प्रकाशित 1828, पेज-108
27. गुप्ता, बी0डी0, 'मस्तानी बाजीराव एवं उनके वंशज बांदा के नवाब', पूर्वोधृत, पेज-2
28. तिवारी, गोरेलाल, पूर्वोधृत, पेज-232
29. अन्धारे, बी0आर0, बुन्देलखण्ड अंडर द मराठाज', दिल्ली, पेज-38 तथा त्रिपाठी, काशी प्रसाद, पूर्वोधृत, पेज-134
30. तिवारी, गोरेलाल, पूर्वोधृत, पेज-233
31. वही, पेज-233, 234
32. त्रिपाठी, काशीप्रसाद, पूर्वोधृत, पेज-134
33. वही, पेज-135
34. तिवारी, गोरेलाल, पूर्वोधृत, पेज-234
35. त्रिपाठी, काशीप्रसाद, पूर्वोधृत, पेज-135
36. वही, पेज-135, 136
37. त्रिपाठी, काशीप्रसाद, पूर्वोधृत पेज-136, 137
38. तिवारी, गोरेलाल, पूर्वोधृत पेज-235